# HINDI PROJECT – ll

# ग्रामीण जीवन

ग्रामीण जीवन का विचार जब भी हमारे मन में आता है तो अपनेपन से भरे जीवन की छवि मन में हमेशा बनती है।दूर लहराते खेत, खेत जोतते किसान, गांव की चौपाल में खेलते बच्चे और घर का काम करती महिलाएं का चित्र बन जाता. गांवों में भी कई विकास हुए हैं। आजकल गाँवों में सड़कें भी बन रही हैं, बिजली भी मिल रही है, सिंचाई के लिए पानी भी मिल रहा है, शिक्षा भी मिल रही है, अच्छे अस्पताल भी छप रहे हैं। ,...गांव के बच्चे बहत सारे खेल खेलते है जैसे गिल्ली डंडा, खो-खो। ,हाइड एंड सीक, रस्साकशी, लंघन, लंगड़ा पैर ... आदि। वे हमेशा धूप में खेलते हैं और यही कारण है कि वे हमेशा इतने सक्रिय और स्वस्थ रहते हैं...गाँव में लोग तरह-तरह के काम करते हैं जैसे कोई किसान तो कोई शिक्षक, कइ मिट्टी के बर्तन और कपड़ा बनाने का काम है और उन के मन में कोइ भी काम छोटा नहीं होता हैं ...

गांव में रहना एक अद्भुत अनुभव है

* दूसरी ओर, शहरों में लोग हमेशा वक्त की कमी से जूझते है, यहां हर कार्य काफी तेजी
* के साथ करना होता है।. वहाँ हमेशा अच्छा प्रदर्शन करने का जबरदस्त तनाव बना रहता
* है और व्यस्त शहरी जीवन की वजह से स्वास्थ्य संबंधी अन्य परेशानियां भी हो जाती हैं।
* शहरी निवासियों को अपने मित्रों, पड़ोसियों, रिश्तेदारों, या यहां तक कि अपने परिवार के

सदस्यों से मिलने के लिए भी काफी कम समय होता है।जैसे-जैसे शहरों में रहने वाले लोगों की

आवश्यकताएं एवं उनकी लागत बढ़ती जा रही है

* गांवों में एवं शहर में रहने वाले लोगों के जीवन में सिर्फ इतना ही फर्क नहीं है। शहरी और
* ग्रामीण जीवन एकदूसरे के बिल्कुल विपरीत है और इन दोनों जीवनों में जमीन आसमान का
* फर्क है। एक तरफ जहां ग्रामीण जीवन में संयुक्त परिवार, मित्रो, रिश्तेदारों और साधरण जीवन
* को महत्व दिया जाता है। वही शहरी जीवन में लोग एकाकी तथा चकाचौंध भरा जीवन जीते है।
* गांवों में भी जीवन की अपनी समस्याएं हैं। कई गांवों में भी शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, परिवहन और बिजली जैसी बुनियादी सुविधाओं का भी अभाव है। हालांकि हम चाहे गांव में रहे या शहर में लेकिन हमें अपने जीवन में सही संतुलन और उद्देश्य को स्थापित करने की आवश्यकता है।